अशोक प्रियदर्शी

'द रूट्स' अपनी जड़ों की भली-बुरी यादें बिसरतीं नहीं

इसे नॉस्टेल्जिया कहना शायद ठीक न हो, किन्तु सुधा जी की कथा कहानियों में भारत और विशेषकर पंजाब के भले-बुरे चित्र बार-बार आते हैं। असल में अपनी जड़ें टूट भी जाएँ तो उनसे भावात्मक लगाव तो बना ही रहता है, लड़कियों-महिलाओं में खासकर। भोजपुरी का एक लोकगीत अत्यंत प्रसिद्ध है- 'निमिया के डाढ़ जनि कटिहड ए बाबा, निमिया चिरइयाँ के बसेर।' विवाह के बाद ससुराल जाती लड़की अपने पिता से कहती है- 'बाबा नीम की डाल मत कटवाइएगा, उस पर चिड़ियों का बसेरा है।' सुधा ओम ढींगरा का वैशिष्ट्य यह है कि वह अपनी पैतृक भूमि और अपने प्रवास-निवास की वर्तमान भूमि के बीच सेतु-सा निर्मित करती हैं। दोनों को प्रायः समान महत्त्व देते हुए। इससे भी बड़ी बात यह कि उनकी दृष्टि सकारात्मक है। उनका मानना है कि पंजाब या कि अमेरिका (अमेरिका बड़ा देश है उसके संदर्भित इलाके), बुरे लोग हर जगह हैं और बुरे अपनी बुराइयाँ साथ लिए चलते हैं, किन्तु इन स्वार्था-लोलुप लोगों के बीच कोई न कोई देव पुरुष या देवी महिला भी होती है जो मानवता से हमारे टूटते विश्वास को बचा लेती है। याद आ जाती है 'अज्ञेय' की कहानी 'शरणदाता', जो उसी पंजाब में भारत-विभाजन के दौर में मुस्लिम बहुल इलाके में एक न एक मुसलमान बंदा ऐसा निकल जाता है जो विश्वास की डोर टूटने नहीं देता।

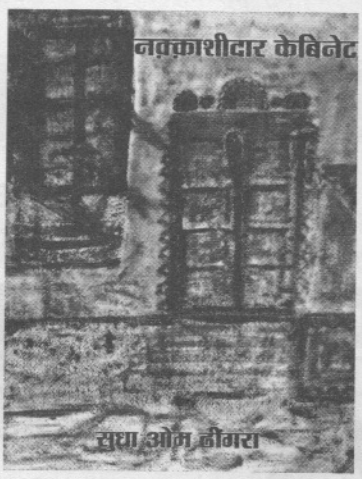

मैं फिलवक्त 'सुधा जी के उपन्यास नक्काशीदार केबिनेट' की बात कर रहा हूँ। मेरी विनम्र दृष्टि में किसी भी कथाकृति की पहली शर्त उसकी पठनीयता है। मैं कहता हूँ 'गोदान' में प्रेमचंद किसान के दैन्य, उसकी विवशता का बड़ा सवाल उठा रहे हैं लेकिन यदि वह उपन्यास इतना रोचक न हो कि पाठक को अंत तक बाँधे रखे, पूरी किताब पढ़वा ले जाए तो लेखक का कथ्य संप्रेषित कैसे हो? सुधा जी ने अपनी कृति में कथारस बनाए रखा है और आप इसे पढ़ना शुरू करें तो प्रायः एक साँस में इसे पूरा कर जाएँगे।

इस उपन्यास की बुनावट भी खास है याने टेक्स्ट के साथ इसका टेक्सचर भी प्रभावित करता है। अपनी कथा सुनाने के लिए वह हजारी प्रसाद द्विवेदी के उपन्यासों की तरह किसी न किसी छद्म का सहारा लेती हैं। मसलन जो कहानी वे सुना रही है, वह तो सोनल की डायरी में दर्ज है, कथावाचिका सम्पदा तो सिर्फ उस डायरी को पढ़ रही है। उसने अधूरी कथा को पूरा कर दिया है, सूत्रों के ताने-बाने को जोड़ दिया है, बस।

यह उपन्यास एकदेशीय नहीं है। छोटा होने के बावजूद यह कई परिवेश के कई दृश्य पूरी प्रमाणिकता के साथ खड़े करता है। इस उपन्यास को पढ़ें तो अमेरिकी जीवन की सुख-सुविधाओं की तसवीर भी मिलेगी, आपदा का खौफनाक मंजर भी, अमेरिका में ऐसी आपदाओं से कैसे लड़ते हैं और शासन ने कैसी व्यवस्था की हुई है, इसका विवरण-संकेत भी। यह भी कि गरीब बेसहारा सिर्फ भारत में नहीं हैं, अमेरिका में भी हैं। कथा मूलतः वही, पंजाब में संपत्ति के प्रति दुर्धर्ष आकर्षण की, स्त्री को भोग्या बनाने की, किन्तु इन त्रासद तसवीरों के बीच पम्मी और मीनल के बीच प्यार का कोमल तंतु भी है, शीरीं-फरहाद सरीखा पागलों वाला प्यार नहीं, मन से प्यार और अपने प्यार की दुश्वारियाँ दूर करने का जज्बा! भारतीय पुलिस सेवा की नौकरी पम्मी ने छोड़ दी है और अमेरिका चला गया है, आगे वकालत पढ़ने के लिए, तो वस्तुतः वह सोनम के प्रति प्यार का स्वर्णिम तार ही है जो उसे न सिर्फ खींचता बल्कि उसे उसके कर्तव्य की याद भी दिलाता है।

यह उपन्यास प्रॉक्सी से पढ़े जाने के लिए नहीं है, फिर भी। कथा प्रारम्भ होती है कथा की नैरेटर सम्पदा और उनके पति सार्थक के अमेरिकी निवास के साथ। उनके बच्चे बड़े हो गए हैं और बाहर रहते हैं। टीवी पर समाचार आ रहा था कि 'हरिकेन' के साथ 'टॉरनेडो' पूरी शक्ति से तेज गति से उनके प्रदेश की ओर बढ़ रहा है। लेखिका की पंक्ति है-' प्रकृत मनुष्य से अधिक संवेदनशील है, मैंने उसे तबाही लाने से पहले तड़पते देखा है।'.... और तबाही आ गई। इस तबाही का मंजर लेखिका के शब्दों से ही देखते बनता है।

क्या चित्रण है.....

इस प्रभंजन में घर में एक 'नक्काशीदार केबिनेट' भी जख्मी हुआ है। उस केबिनेट में अर्सा पहले सोनल नाम की एक भारतीय युवती की दी गई डायरी पड़ी थी। सम्पदा उसे पढ़ने का समय नहीं निकाल पाई। अर्से बाद उस डायरी के पृष्ठों को सम्पदा ने खोला है। यह औपन्यासिक कथा सम्पदा की नहीं, उसी सोनल की है। सोनल की कहानी पुरानी रवायतों में तड़पती औरत की कहानी है। संपत्ति पाने के अंधे मोह में गलीज से गलीज स्तर तक जाने की कहानी है, पहले चाचा और फिर नाना जायदाद हड़पना चाहते हैं और उसके लिए सारे हथकंडे अपनाते हैं। पम्मी सोनल की बहन मीनल का बचपन का दोस्त है, जहीन है, संस्कारी है। दोनों की मौत हो जाती है। जिनकी दुःखभरी कहानी सोनल की कहानी का आरम्भ करती है। सुक्खी, जो पम्मी का भाई है। जिससे सोनल जुड़ी थी, किन्तु पारिवारिक दबाव में एक एन.आर. आई के साथ ब्याह कर अमेरिका भेज दी जाती है। उसका पति औरतों का कारोबारी है, एक रैकेट-सा चलाता है। वहाँ से भाग निकलती है सोनल। एक वृद्ध अमेरिकी दंपति उसे शरण देते हैं। सुक्खी एसपी हो गया है। अमेरिकी वीजा और ग्रीन कार्ड की समस्या डराती है। सोनल का पति बलदेव अंततः पकड़ा जाता है। सुक्खी ने नौकरी छोड़ दी है, वह अमेरिका में कानून पढ़ रहा है। बलदेव उसी की कोशिशों से पकड़ा गया है। अब सुक्खी और सोनल एक नई जिन्दगी शुरू करेंगे। बीच में सिख इतिहास और खालिस्तानी आंदोलन का भी ब्योरा है।

कथा का समापन उसी टॉरनेडो के समापन के साथ होता है। वहाँ मशीनी अमेरिका में भी इतनी सद्भावना है कि लोग टॉरनेडो से त्रस्त मोहल्ले (सब डिवीजन) के परिवार वालों को आमंत्रण दे रहे हैं कि वे उनके यहाँ आ जाएँ। वहाँ बिजली पानी है।

सुधा जी का इतना सचेत और सांस्कृतिक होना भी चौंकाता है। अमेरिका में रहते हुए भी खालिस्तान आंदोलन की पीड़ा की पहचान उन्हें है। आश्चर्य होता है कि पाश को याद करती, पढ़ती और दुहराती हैं। सुधा जी की भाषा की पंजाबी छौंक भी 'मक्के की रोटी' और 'सरसों दा साग' का स्वाद देती है। पंजाबी संवाद भी हैं जो कथा को प्रामाणिकता देते हैं और हिंदी वालों के लिए पंजाबी समझना कोई कठिन भी नहीं। पंजाबी, हिंदी में लिखें और हिंदी वाले पंजाबी के कुछ संवाद समझ भी न पाएँ, यह तो अन्याय होगा। हाँ अंग्रेजी शब्दों के पंजाबी उच्चारण से बचना शायद बेहतर होता जैसे 'कैबिनेट' को 'केबिनेट' क्यों कहें?

इस उपन्यास की कथा कॉम्प्लेक्स है तथा कथा-विन्यास भी। इसलिए संभव है मैंने जो कथासार दिया है उस में कुछ गलतियाँ भी हों लेकिन कथा अंततः इतनी रोचक है कि उसकी धनक दिमाग में बनी रह जाती है, संज्ञाएँ भले गड्डमड्ड हो जाएँ। असल में इस उपन्यास की कथा में फैलाव की गुंजाइश थी, इसके छोटे कलेवर के कारण पात्रों की पहचान खो जाती है।

महत्त्वपूर्ण लेखन का एक कौशल यह होता है कि वह कथा में कुछ ओपेनिंग्स, कुछ सुराख छोड़ देता है और यों अपने-अपने ढंग से आप कथा को व्याख्यायित कर पाते हैं और वह काल को जीत लेता है बासी नहीं पड़ता।

श्रीमती सुधा ओम ढींगरा का उपन्यास 'नक्काशीदार केबिनेट' पढ़ने का सुख देता है और पुस्तक लेखन की पहली शर्त पाठक को सुख देना ही है। इस उपन्यास के लिए सुधा जी को बधाई तो दी ही जानी चाहिए। ●

प्रकाशक-शिवना प्रकाशन,
पी. सी. लैब, सम्राट कॉम्प्लेक्स बेसमेंट,
बस स्टैंड, सीहोर - 466001, मध्य प्रदेश

Sudhir Aggarwal 94160-26344
0171-2540344

PAWAN INDUSTRIES

Mfrs. & Dealers of :-
All types of Weight & Measurements, Electronic Scales & Weight Bridge.

▶ Platform Scales ▶ Counter Scales ▶ Other Weighing Instruments
▶ Welding Materials ▶ R.O. Water Purifier

Opp. Housing Board Colony, Naraingarh Road, Ambala City
E-mail : pawan.industries@hotmail.com